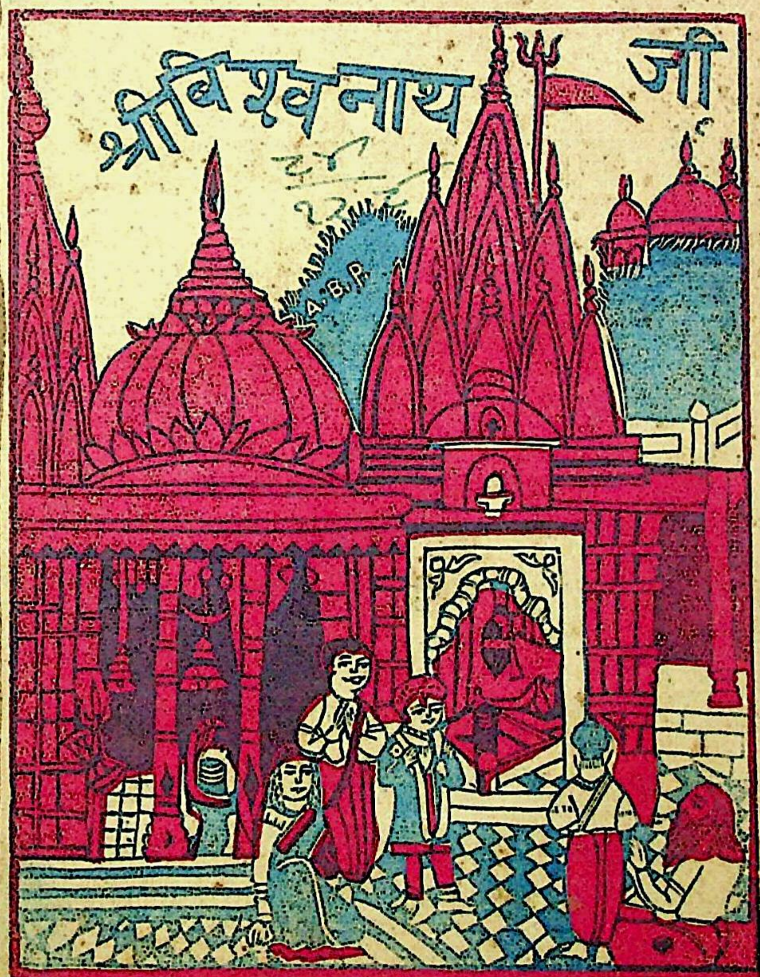

THE RAJA PERFUM
REGD

श्री काशी माहात्म्य



प्रकाशक—बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुक्सेलर,
राजादरवाजा, ब्राञ्च—कचौड़ीगली, बनारस सिटी। मूल्य ≡)

❀ ओं नमः शिवाय ❀

असली—

श्री काशी माहात्म्य भाषा ।

❀ पञ्चकोशी यात्रा सहित ❀

प्रथमोऽध्यायः

एक सयम नर्मदा नदीके तट पर आनन्द पूर्वक बैठे हुए भृगु मुनि से लोमशादि ऋषियोंने श्रीकाशी क्षेत्रका माहात्म्य पूछा तब सहर्ष भृगुमुनि ने वर्णन किया कि हे मुनिश्रेष्ठ ! श्रीविश्वनाथ यह आदि लिङ्ग शिवजी का स्थित है कि जिसके प्रभाव से काशीजी में पापात्मा कोई भी जीव शरीर को त्यागता है उसको निःसन्देह मुक्ति पद प्राप्त होता है। काशी यह शब्द उच्चारण करने वाले पुरुष को पापरूपी पहाड़ नाश होकर ज्ञान के प्राप्त होने से मोक्ष अवश्य मिल जाता है । धन्य है वह पुरुष जो निरन्तर काशीधाम में बास करते

हैं। हे मुनि! काशीपुरी का माहात्म्य मैं कहाँ तक वर्णन करूँ।

द्वितीयोऽध्यायः

सतयुग में अति शूरवीर भूरिद्युम्न नामक राजा राज्य करता था। जिसकी सहस्रों रानियों में विभावरी नामक मुख्य रानी थी दैववश कामदेव के वशीभूत होनेके कारण समस्त राज्यको शत्रुओं ने निज वश में कर लिया और राजा भूरिद्युम्न विभावरी रानी को साथ लेकर तलवार लिये भयानक विन्ध्य पर्वत पर चला गया। कछ समय के बाद एक दिन राजा से रानी ने कहा कि हे राजन्! आपने कामदेव के वश होकर निज राज्य और अन्य स्त्रियों को खो दिया अब हमसे और आपसे इस निर्जन बनमें कैसे रहा जायगा। जो पुरुष धर्म अर्थ को त्याग कर कामही के वश में रहता है उसकी आपही की सी गति होती है। बाद वे राजा रानी क्षुधासे व्याकुल हो निज कर्म

का स्मरण करते हुए घूमने लगे। एक रोज क्षुधा से पीड़ित राजा के मनमें पाप आया कि मैं निज रानीही को मार कर खा जाऊँ। रानीको यह बात मालूम हुई तो रानी ने कहा कि हे महाराज! आपका मुखकमल क्षुधा से पीड़ित है अब मेरे शरीर में से मांस निकाल कर भोजन कीजिये और निज प्राणों को बचाइए। नीतिके बचन सुन उस घोर पापी राजा ने रानी को मार कर ज्योंही मांस खाने को बैठा त्योंहीं दो सिंह आपसमें खेलते हुए वहाँ पर आये सिंहको देखकर राजा भाग खड़ा हुआ और चार कोस की दूरी पर धान के बोझको लिये चार ब्राह्मणों को देखकर राजा ने उन्हें मार कर धान खाने को ज्योंहीं उद्यत हुआ त्योंही यज्ञोपवीत और मृगचर्म को देखा तो राजाको दैववश ज्ञान हुआ कि मैंने निज कुबुद्धि से स्त्री और ब्राह्मणों को मारकर ब्रह्महत्या किया जिससे मनुष्य सौ जन्म नर्क में वास करता है। और स्त्री

के बधसे उक्त पचास कल्प है। अहो मैंने महाभारी घोर पाप किया। यह बिचार करता हुआ राजा भूरिद्युम्न सालंक्य मुनि के स्थान में आकर समस्त निज कथा को कह सुनाया और प्रायश्चित पूछा। तब दयाभावसे मुनिने कहा अरे दुष्ट अब तू काशी जा इसके निश्चय के लिये पाँच काले कपड़े तू पहन ले सो काशी के दर्शन मात्र से सब सफेद हो जायँगे यह सुन भूरिद्युम्न सात दिन में चलकर समस्त जीवों के भय का नाश करने वाली काशी को पहुँचा सो श्री काशी के दर्शन मात्रसे उसके पाँचों कपड़े शरदऋतु के सदृश्य उज्वल चन्द्रवत् से सफेद हो गए और यह घोर पापी काशीमें नित्य श्रीगंगा स्नान और श्रीविश्वेश्वर का दर्शन पूजन करने लगा। गंगा गंगेति ऐसा उच्चारण करने, मात्र श्रीविश्वनाथ मणिकर्णिका के दर्शन पूजन से और ताड़क मन्त्र के प्रभाव से इस क्षेत्र में शित सारुप्यमुक्ति को प्राप्त हुआ। इससे हे मुनिवर्ग ! काशी में किसी जगह कैसा ही घोर पापी शरीर त्या-

गता है उसे अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है तो धर्मात्माओं को गति को कहना ही क्या है।

तृतीयोऽध्याय ३

भृगुमुनिने कहा कि हे ऋषियों ! जिस काशोमें पतितोद्धारिणी श्रीगङ्गाजी और मणिकर्णिका कुण्ड श्री साक्षात् आदि शिवलिंग विश्वनाथजी विराजमान हैं उस काशी के माहात्म्य को मैं क्या कह सकता हूँ। जिस पुरुषने काशी में बस करके कोई पाप कर्म किया उसको तीन हजार वर्ष रुद्र-पिशाच होना पड़ता है इसलिए काशी में रहकर सदैव धर्म का आचरण करे। श्रीविश्वनाथजी काशी में रहते हुए समस्त जीवों को ताड़क मंत्र का उपदेश करते हैं जिसके प्रतापसे वह अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त होता है। एक समय सरस्वती नदी के किनारे वशिष्ठजीके पास वामदेव मुनि आये और परस्पर वार्तालाप होते हुए श्री काशी धाम के महात्म्य को बामदेव ने वर्णन किया कि हे तपोधन ?

श्रीविश्वनाथ जी का क्षेत्र जो काशीपुरी है इसमें पापी और पुण्यात्माओं को श्री शिवजी शुभगति देते हैं और आप सदैव काशी में वास करते हैं।

परलोक यह वाराणसी शंकर का आनन्दवन है यद्यपि पृथ्वी में अनेकों ही तीर्थ हैं; परन्तु सुधारने के लिए काशी है। वहाँ के पुण्य का भाव अनन्त है जो कोई यहाँ पर एक वर्ष एक भी ब्राह्मण को बराबर भोजन देता है उसको गंगाजी की जितनी बालूकायें हैं उतने वर्ष भोजन देने का फल प्राप्त होता है। जो पुरुष काशी में सदैव वास करते हैं वह शिव समान हैं। इस भाँति वशिष्ठ और वामदेव को वार्ता होकर दोनों ही ऋषिवर्य काशी को चल दिये। काशी के निकट आनेही जंगल में विकरालोन्मालि राक्षसके अनेक निशाचर अस्त्र शस्त्र लिये दिख पड़े और उक्त राक्षसों का स्वामी हूँ डक नामके राक्षस से वशिष्ठ और बाम देवने वार्तालाप करके कहाकि हे राक्ष-

इन दोनों पुरुषों को शीघ्र ही मार डालो इन्हीं वशिष्ठके पुत्र पराशरने राक्षस घातक नाना के यज्ञ करके सकुटुम्ब हमारे पिताको मार डाला है। यह आज्ञा पाय ज्योंही निशाचर लोग दौड़े त्योंहीं श्रीशंकरजी क्रोध करके निज तीसरा नेत्र खोलकर राक्षसों को भस्म करके वशिष्ठ और वामदेवजी का कष्ट छुड़ाय अन्तर्ध्यान हो गए और वे दोनों मुनि काशी में जाय तीन हजार वर्ष-तक तपस्या करके शंकरजी को प्रसन्न किया। और विश्वनाथजी से निरन्तर काशीबास करनेको वर पाय निवास करने लगे। जो कोई यात्री उन मुनियों के स्थान पर जाय दर्शन करेंगे और इस कथाको सुनेंगे तो उनके काशीवास करने के जितने विघ्न हैं वे सब नाश हो जायेंगे।

चतुर्थोऽध्यायः ४

एक समय याज्ञवल्क्यने कहा कि आशुतोश श्री बिश्वनाथजी की काशीपुरीमें जो शरीर को त्यागता है उसे निश्चय ही मोक्ष मिलता है। काशी में ब्रह्मा

स्वरूप हजारों लिङ्ग हैं, तिनमें जोति लिङ्ग श्री विश्वनाथजीका है कि जिसके दर्शन से सहज ही में मोत्तहोता है। ज्ञानवापी के जल सेवन से दिब्य दृष्टि होती है। किसी समय में श्वेत देश का राजा एक हजार वर्ष काशीमें और कैलाशमें एक सौ वर्ष तक राज्य करके शङ्करजी से भेजे हुए दुर्वासा ऋषि द्वारा काशी में यज्ञ किया था। ऐसी यह पुनीत पुरी है। काशी में ब्रह्मा ने दशा अश्वमेध यज्ञ किया था और शंकर से अनेक वार्तालाप ब्रह्मा ने किया कि धन्य है काशी और काशीवास और काशी में प्राण त्यागने वाले। काशी में आकर कामादि अनर्थों से खूब ही वचा रहे। एक समय नारद जी मरुत की यज्ञ में काशी माहात्म्य को सुन कर आश्चर्यित हो सूर्य-नारायणसे काशी माहात्म्य पूछा सूर्यनारायण भगवानने कहा कि हे नारदजी तुमने जो यज्ञमें सुना है वही सत्य है सर्वत्रतो मनुष्यका कर्म सहायक होता है परन्तु काशी में मरनेके वक्त

काशी यह दो अक्षर सहायक होकर पापी और पुण्यात्मा को ताड़क मन्त्र द्वारा मोक्ष मिलता है केवल पापी को भैरवी यातना भोगनी पड़ती है परन्तु वह नर्क द्वार में नहीं जाता है। इस भाँति नारद को सूर्य भगवान ने समझाया और प्रसन्न होकर नारद निज लोकको चले गये।

पंचमोऽध्याय ५

हे महर्षि! एक समय शिव भक्त काशी में सुनन्दन नामक राजाको विश्वपति यज्ञमें सनत्कुमार जी जाकर काशीजी का माहात्म्य वर्णन किया कि जमुना तट पर मौन नामक मुनिके माण्डव्य और मुग्दल नामक शिष्य थे। उन शिष्यों में माण्डव्य बलि राजा की यज्ञ में गया और यज्ञ पूर्ण होकर काशीजी का माहात्म्य सुनाकर बलिराजा के साथ माण्डव्य काशीजी को आये। इतने ही के अन्दर में मौन ऋषि भी काशी आये थे सो माण्डव्य और बलि ने मौन को देखकर पूजन करके मणिकर्णिका में स्नानकर श्रीविश्वनाथजी का दर्शन

करके काशी माहात्म्य पूछा तो मौन मुनि ने भली भाँति मोक्षपद काशीजी का माहात्म्य वर्णन किया कि हे बलि! जो पुरुष काशीमें धर्म करता हुआ सदैव वास करता है उसको मोक्ष अवश्य ही मिलता है और जो कोई पाप कर्म करता है उसको अवश्यही भैरवी यातना भोगनी पड़ती है यह कथा सुनकर बलि शिवमूर्ति की स्थापना काशीमें करके निज राज्य को चले गये। श्री काशी जी में देवीदास नामक राजा अपुत्र था सो राजा रानी के साथ पुत्र अर्थ निकुम्भ महाराज की एक वर्ष सेवा किया परन्तु पुत्र न मिलने से क्रोधकर निकुम्भजीका मन्दिर तुड़वा डाला तो निकुम्भ ने शाप दिया तेरे इस अन्याय से काशी एक हजार वर्ष शून्य रहेगी प्रातः होते ही देवीदास को मारने के लिये तालजंघा नामक राजा आए बाद घोर संग्राम होने से देवीदास को मारकर भारद्वाज के आश्रम को चला गया और उक्त दोनों राजाओं ने काशी को

शून्य कर दिया। राजा देवीदासने भारद्वाज से समस्त कथा कही तब भारद्वाजने काशी माहात्म्य वर्णन करके राजा का पुत्रेष्ठि यज्ञ कराय प्रतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न कराया कि जिससे हैहय और तालजंघा राजा मारे गये और एक हजार वर्ष काशी शून्य रही। बाद देवीदास काशी में क्रिया पूर्वक बास किया तब मोक्षको प्राप्त हुआ।

॥ इति पञ्चमो अध्याय समाप्त ॥



❀ पंचकोशी यात्रा ❀

यह यात्रा साल में दो बार करनी चाहिए, इस यात्रा से काशी में किया हुआ पाप नष्ट हो जाता है। मणिकर्णिकायैनम्: । सोम नाथायनमः म० तत्रैव। मणिकर्णिकेश्वरायनमः। विरूपाक्षाय नमः। म० अग्रे सिद्धविनायकायनमः म०। मणिकर्णिकाघाट। नीलकण्ठायनमःअग्रे। तारकनाथायनम: म०। अग्रे गंगा केशवायनम: म० ललिताघाटललिता-देव्यैनम: म० जरासिन्धेश्वरायनम: म० मीरघाटसोमेश्वरायनम: म० मान मन्दिर। ढालभ्येश्वरायनम: म० तत्रैव शूलटकेश्वरायनम: दशा-श्वमेध। आदि वराहेस्वराय नमः म० तत्रैव दशाश्वमेधेस्वराय नमः तत्रैव। बन्दिदेव्यैनम: म० तत्रैव। सर्पस्वराय नमः म० पांडेघाट।

केदारेश्वराय नमः केदारघाट । हनुमदीश्वरायनमः म० केदारघाट । हनुमदीश्वराय नमः म० हनुमानघाट । लोलकार्यै नमः म० भदैनो अर्कविनायकायनमः म० तत्रैव । संगमेश्वरायनमः म० भदैनो । अर्कविनायकानमः म० तत्रैव । संगमेश्वरायनमः म० असीसंगम । दुर्गाकुण्डायनमः प्रथम-निवासस्थान दुर्गाधिनायकम् । दुर्गादेव्यैनमः म० तत्रैव विश्वेवलैश्वराय नमः म० मार्गमें कर्दमेश्वराय: नमः, द्वितीयनिवासस्य कर्दमतीर्थायनमः म० तत्रैव । कर्दमतीर्थाय नम. म० तत्रैव । चामुण्डायें नमः म० अग्रे । मोक्षेश्वरायनमः म० गांव में वरुणेश्वरायनमः तत्रैव । वीरभद्रेश्वरायनमः म० अग्रे गांव में विकटाक्षदुर्गायैनमः म० तत्रैव उन्मनभैरवाय नमः म० अग्रगांव नीलवर्णायनमः म० तत्रैव । कलिकुंठायनमः म० तत्रविमल दुर्गायनमः म० अग्रे । महादेवाय नमः म० नन्दिकेशरणायनमः म० अग्रे भृंगिकीटगणाय नमः अगणिप्रियाय नमः तत्रैव । विरूपाक्षायनमः गौरगांव यक्षराय नमः । विमलेश्वराय नमः । ज्ञानदेवश्वराय नमः । अमृत स्वराय नमः । गन्धर्वसागराय नमः । भीमचण्डी । भीमचण्डिदेव्यैनमः तत्रैव । चण्डिर्वताकाय नमः रविकाक्ष गंधर्वयमलमतत्रैव । नरकार्यौव तारका शवाथनमन्तएक पद्मागणायनमः महाभीमायनमः । आगेतलवायरभैरवायनमः आगे गांवमें । भैरववैवव्याथासायनमः म० त० भूत नाथायनमः अग्रे । सोमेश्वरायनमः । सिद्धसागरायनमः प्रसिद्धम् कालनाथायनमः डौसा गांव में । कपर्दीश्वरायनमः अग्रे । कामेश्वरायनमः अग्रे । गणेश्वरायनमः अग्रे । वीरभद्रायनमः । चौखण्डी गांव में चक्रमुखाय नमः तत्रैव । गणनाथाय नमः चौखण्डीग्राम देवविना-

यकम् प्रसिद्धम् । षोडषविनायकं नमः भुइली गांव उत्कलेश्वरायनमः तत्रैव । रुद्रागणायनमः न अतिथोमभ्यै नमः अग्रे रामेश्वरायनमः म० तत्रैव सोमेश्वरायनमः । तत्रव भरतेश्वरायनमः । तत्रैव शत्रुघ्नेश्वरा-यनमः नहुदेश्वरायनमः । तत्रैव द्यावाभूमिश्वरायनमः । तत्रैव असंख्या-ततीर्थेभ्योनमः वरुणापार । असंख्याततिंगेभ्योनमः तत्रैव देवसंघेश्व-रायतमः कमीरा गांव में । पाशपांणि विनायकायनमः लेनमें पृथ्वीश्वरायनमः खजुरी गांव में वगंभग्यो नमः तत्रैव यपसारावणा-यनमः दीनदयालपुर वर्षकध्वज तीयपिनमः कपिलधारा वृषभध्वजाय-नमः तत्रैव ज्वाला नृसिंहायनमः बदुआ गांव । संगमेश्वरायनमः तत्रैव । सर्वविनायकानमः तत्रैव । आदिकेशवायनमःतत्रैव प्रहलादेश्व-रायनमः प्रहलादघाट त्रिलोचन स्वरायनमः त्रिलोचन । पंचगंगापौनम् प्रसिद्धम, विन्दुमाधवाय नमः प्रसिद्धम्, वशिष्ठवामदेवेभ्योनमः, संकटा-घाट यवतेश्वराय नमः तत्रैव । महेश्वरायनमः मणिकर्णिका सप्तावर-णविनायकायनमः ब्रह्मनाल पटपञ्चाशद्विनायकेभ्यो नमः तत्रैव मणिकर्णिकायै नमः प्रसिद्धम् । मुक्तिमण्डपायनमः । सिद्धम् । विश्वे-श्वर प्रसिद्धम् द्रवाणयेनमः ढुंढिराज वनम् । भैरवायनमः । आदि-त्यायनमः । माड़ादिपंचविनायकेभ्योनमः ॥ इति पंचकोशी यात्रा सम्पूर्णम् ।

* श्री गङ्गाजी की आरती *

ॐ जय गंगे माता श्री जय गंगे माता । जो नर तुमको ध्याता जो नर तुमको ध्याता ॥ मन. वांछित फल पाता । ॐ जय गंगे माता ॥ १ ॥ चन्द्रसी ज्योति तुम्हारी निर्मल जल आता । शरण

पड़े जो तेरी शरण पड़े जो तेरी ॥ सो नर तर जाता ॐ जय गंगे माता ॥ २ ॥ पुत्र सागर के तारे सब जगकी ज्ञाता ! कृपा दृष्टि तुम्हारी कृपा दृष्टि तुम्हारी ॥ त्रिभुवन सुखदाता । ॐ जय गंगे माता ॥ ३ ॥ एक ही बार जो तेरी शरणागति आता । यम की त्रास मिटाकर यम की त्रास मिटाकर ॥ परम गति पाता । ॐ जय गंगे माता ॥ ४ ॥

❀ आरती ❀

जय गंगाधार जय हर जय शिव जय गिरिजाधीश, त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश, ॐ हर हर हर महादेव, शम्भो कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुम विपिने, गुञ्जति मधुकरे पुञ्जे कुञ्जेबनेगहने ओं, हर हर हर महादेव, शम्भो । अनुत चरणसरोज हृदय कमले धृत्वा, अवलोकयति जय महेशं शिवलोकं गत्वा, ओं हर हर हर महादेव, शम्भो ।

❀ इति ❀

मुद्रक-बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुक्सेलर, बम्बई प्रेस राजादरवाजा बनारस ।

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें

फोकलास सचित्र ४)
अकबरवीरबलविनोद बड़ा ४)
अकबरवीरबलविनोदछोटा १)
किस्सा सारंगा सदाब्रज १)
किस्सा तोतामैना ८ भाग २)
गढ़पर्वत की लड़ाई १)
राजा ढोलन का गीत २)
किस्सा रूपतारा ॥)
सिंहासन बतीसी १)
बैताल पचीसी १।)
बिहुला बिषहरी ६ खंड २)
बिहुला बालालखन्दर १)
शोभानायक बनजारा १।)
मारठी बुजाभार ९६ भाग ५)
मोरठी बुजाभार ३२ भाग ३)

दामर्या की सासवेदी ।।)
कौवा हकनी ॥)
सावित्रीसत्यवान नाटक ।॥)
वीर अभिमन्यु नाटक ।॥)
पतिभक्ती नाटक ।॥)
बूटीप्रचार वैद्यक ४)
इन्द्रजाल कौतुकरत्न ४)
ब्रह्मानन्द भजनमाला १॥)
गीताभाषा १८ अध्याय २॥)
चाणक्य नीति दर्पण ।॥)
आल्हा की लड़ाई २० मेल
हरमेल की कीमत ॥)
वैद्यक संग्रह १)
वैद्यक प्रकाश १)
घरेलु पशु चिकित्सा ॥)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्राञ्च—कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

बम्बई प्रेस, राजादरवाजा, बनारस सिटी।


ORKS. BANGALORE CITY.
BATHY No.24